

र्ने न गी क्षेत्र या के या प्राप्त के ती का क्षेत्र में का या के ती का कि या के ती का कि या के ती के त

र्वास्त्रिरावर्ते वे वि.वी.वि.वी.बुं स्वाप्तराद्ध्यार्या व्याप्तराद्ध्यार्या व्याप्तराद्ध्यार्या विषा

Tibetan Women Authors Series

TSERING AND HER YAK GO TO THE MOON (I)

(In Tibetan and English)

By Kalsang Yangzom Translated by Nangsal Tenzin Norbu Illustrated by Tenzin Tendhar Book design by Tsering Nangyal

Text ©2024 by Kalsang Yangzom Illustrations ©2024 by Tenzin Tendhar All rights reserved.



ज्ञान्त्रामा क्ष्यान्य क्षयान्य क्षयाच क्षयान्य क्षयान्य क्षयान्य क्षयान्य क्षयान्य क्षयाच क्षयाच्य क्षयाच क्षयाच क्षयाच क्षयाच्य क्षयाच क्य

क्रें-देट्ड्याक्तां व्याप्त स्ट्रिया क्रिया क्र

द्धिन्गान्ते तुः र्वे के से निवास क्षेत्र निवास क्षेत्र निवास क्षेत्र निवास क्षेत्र क

प्रत्येत्रण श्रेश्वायाययाय ग्रीश्वाय व्याप्त्र श्रेश्वायाय ग्रीश्वाय व्याप्त्र श्रेश्वायाय ग्रीश्वाय व्याप्त श्रेश्वाय व्याप्त श्रेश्व व्याप्त व्याय व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्या



तक्रअःक्ष्रःक्ष्वाःश्वेत्रःव्याः व्याः व्यः व्याः व्य

श्वर-र्या नविष्ण भारति विष्ण भारति । विर्या नविष्ण भारति । विर्या नविष्ण भारति । विर्या नविष्ण भारति । विराम नविष्ण भारति । विराम नविष्ण भारति । विराम नविष्ण भारति । विराम नविष्ण भारति । विष्ण भारती । विष्ण भारति । विष्ण भारत

न्यामः याक्षयः त्वामः विद्यान्तः अळवः व्याः विवाः याः विद्याः विद्याः

"रे.च." बेर-चंदेः वाष्णवाः देते चुः क्रॅं कें सेट-चोः क्रॅं वाश्वः व्याप्तवाः विश्वः क्रें न्याः विश्वः क्रं व्याप्तवाः विश्वः क्रं व्याप्तवाः विश्वः क्रं व्याप्तवाः विश्वः विश्वः क्रं व्याप्तवाः क्रं विश्वः विश



"बेर-नदेःग्यम्निर्मातुः र्वे के सेट-न्ट-सहस्र न्यूर-धेत्र-मास वर्ष दिराश्रेशकेयावराश्चायहासामा व्याप्त विष्य स्वर्धेन स्थित नवे पकर माने नों भ्रम्य । निरामवे से में माना सु सु से से में मिने वहवारायासुरार्सेन ज्ञाने नस्ता ५ कार्सेन वृत्वी स्वारा नेतर त्रा तुः र्रे कें देर वीया ह्या विश्वेषा अपतुः दे विरायवाया विश्वा ग्रीः र्भेर्रायाय हेत्र मुदे र मो स्वर अर्कें से त्यम्य सुर मायाय वर्षे मारासर यर विगा व् केंगा पा कग्या नु से कें मेर ग्रीय सक्त सें सादया ग्री मेर र् त्रुप्तिः में त्याद्रास्य दि स्वित् विद्यालया से प्राप्ति । स्वित् विद्यालया । से प्राप्ति । से "वेर-पर्-पाशुसायाहेत् सूर-"पविसायहपासापादर में।"वेसायळससा पर्ने (वु: कु: ने विंव वक्ष नहेन श्रिंद सेन पर नेना

Ö

म्यत्र अर्कें से ज्या अ ते नु से कें से द मी अ से न मू ते तद त अ द माद र्टा र्ट्युर्रेर्वेट्यानेश्चर्यद्यार्थे ह्या.हेर्युर्युयार्द्धवार्द्धेवे नश्रयात्रकरायात्रवात्रहेषान्त्रेतास्यात्रात्वेषान्तेत्। बेरश्यात्राक्षांकेः रेटावीशार्स्स्वाय्वेते सेट् यटाव्यायत् स्ट्रास्ट्रास्ट्रास्ट्रास्त्रायां स्ट्रास्ट्रा ब्रॅं लग्राश्ची सुग् रेग्राश्चित्र देग् न्तु रहुट हुट दे ल क्षे इसस दसर है ग न हैस श्रेषेत्रम्मित्रेकेन्न्। श्रेम्मिमिन्यूसम्देष्द्रम्नुम्मिन्नेन्न्य देर-श्रद्र-तुः श्रॅं कें देर-द्र-पायम् "देन्यः" बेर-य-मिष्ठशः स्थाप्तुः श्रेवः श्रे रेगायाके कुरामाराय दिना या स्वारा स स्वारा स बुरायाम्बिरायळे सेरायरायवमायविदार्थेरायासेरा



तुः सं कें सेर प्राप्त सं से प्राप्त वार्य की साम स्वाप्त की सं स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त ह.यवश्राग्री.पि.लयो.ची.क्रिश्रास.वियो.यवशा हुश्रो ग्रीश्रश्रास.यक्चिय.यशा यस्त्राच्याक्षेत्रत्रेत्र्याय्याधेत्। म्वास्त्रेत्राय्यास्याध्यास्त्रात्र्याः नश्चरः रु:श्वरः म्वरः श्वरः स्वार्यं म्वरः स्वारं म्वरः स्वारं स्वरः स्वारं स्वरं स्व र्विट वीश वेंद्र धिवा वी धिवा वर्त्व इसस्य द्रा र्श्वेवा कवास द्रा है भीट वी रेग्राश्र श्रु र्केंग्र अभिग र्थें ५ प्रदे ५ प्रम रेश इस्र श दिन । प्रम में वि । प्रम में वि । प्रम में वि । प्रम से श्चरके सहस्य नर्जे नावर रेपि ने नविव के सवे विस कुर ग्रे नगर रेस न्यश्नरम् विवा ग्राट श्चेवा वार्षेया वाद्यर पिट प्रया तु सि स्टेर वीय प्रया र्भरानेदेखिरात्मकुम्राराष्ट्रीत्वर्गात्त्वरात्त्रीं त्यानर्गा भेत्वर्गाण्या ह्य नवे में न्या ने निया के कि स्कूर क्ष्या के निया के निय र्वेदायम्बर्गायादास्रविद्यात्री सेत्। देवदार्श्वेदार्यदा। तुः श्रें के देदामेबर रे सेंदे र्रेन र्र्यन श्री भ्रम्म राज्य मन रास्त्र सेंदि र्रो त्या राशी र्रम राज्य स्वास्त्र स्वास्त्र



वित्र प्रत्यायम् "मेर्न्यः" मेर्निव्यायम् स्ट्रिस्यम् अप्तर्थाः मेर्न्यम् अप्तर्थाः मेर्न्यम् अप्तर्थाः स्ट्रम् वह्नवः विकार्यम् स्ट्रम्

ह्म नदे में विदेशिय अर्दे न ने नियम से अर्दे न न के के दिन शे के नियम इस्राञ्च नवे भ्रेट्र प्राप्ता अदे में त्यते हुतावस्र केत् सें र सेंगा द्रा वुर्नित्रेश्वर्क्ष्यविषाधेवरम्युः र्कें सेर्निश्वेश म्वर्सर्कें र्कें यन्यार्था ग्रीर्थ हिता । असर से हिंदा हो सार्थ हो से १८६६ विदे ह्या विवासाने प्रितासान्या नेदे हे सा शुः ह्या विदे विवास प्रति सावत से सु शुः श्चर्यान्द्र्याश्चारम् श्वरामी वित्रामे स्वित्र स्वत्र स्वत्य र्वे। यर वर्वे। अपिव श्री के। क्षे हे या या दे । कवा या वर्दे दार्थे दाया दिया ।



म्ब्रस्त संस्थान स्थान स्थान

क्रेवरेवेर अळवर सेंस्। तुरसेरळेर नेटर क्या ग्रान्यर होट्र र्या मेंटर सेंसर हैर यदः वियः कुनः क्रेंनः क्रेंन्येदः नेनः क्रेंचिया क्रेया क्रेया क्रेया क्रेया क्रेया क्रेया क्रेया क्रेया क्रेय शुः क्षेत्र विरागे ही वेया वया पया "रे.च." रे.चाहेर या वेर नवे र्र क्ष क्रिया निव र्योद राष्ट्रिया नु क्रिके देट यीय हा निव में राष्ट्रिक स्टार् में या राष्ट्रिया निव से स्टार् में या राष्ट्रिया निव से स्टार् में या राष्ट्रिया निव से स्टार्स में विवास्त्रम् मुवास्त्रप्रमुन्या स्वाद्य क्रिया स्वाद्य स्वाद स् सर्वेटा क्रें.व्रर्-त्रा नगर-रेश-नेवे:व्रट-वी:सविवः क्रेंन्-य-ने-नवा-विदः क्रेंवे: र्रे निर्दर धेव रास्त्र विरस्थिय सिन्स्य सिन्य सिन्स्य सिन्स्य सिन्स्य सिन्स्य सिन्स्य सिन्स्य सिन्स्य सिन्स्य नर्भूरःश्रुर्छर्भ्रवशःश्रुरःश्रुवःयरावात्रा देःवविदःविरःश्रदेःषाश्रुशः यम्बर्गाश्चीक्षानुः कें स्टर्मा क्षेत्रायान्य महामान्य मह र्बेर्न्य वाया वर्षे वित्र वित्र क्षेत्र वित्र व र्सेन में नेया में नेया अर्थे से जाया या यह या त्या से से हैं में में सिव से हैं ने ग्री:यशर्देव:दे:येग्राशःवगुन:पॅट:नदे:र्श्केव:वर्त्व:व्वेव:पॅट्:यःपट:क्रेः यय:र् क्षेत्रः विद्



तुःश्रंक्षंत्रेर्याश्रात्युर्या क्षेत्रा क्षेत्रः स्वादेशः स्वाद्धः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्व

तुः सें कें मेर वीशन्वाय हैं केंद्र मेंद्रे स्ट द्वराषा सामाया सामा हिन्गी है। प्रयाने वुरायया अयायवारा ग्रीरा में दे तु से मन्यों स र्देरश्रासदे अनुत्र यसाने न्या नवर में विया पेंट कु पेत्र सदे स्थ क्षेत्र में न "डेश'वाशुर्या नु'र्से'र्स्ट'रीशक्रें नु'र्सेश्रय'नहर्ने सेति'रर्र त्रार्श्वेन' न्याः अर्देन व्यक्तः स्प्रें न्यते से स्रास्त्र में स्रास्त्र से स्रास क्ट नी वट भे कें प्राया में नाया में नीया या भे कि भी कें कि नाया नवया नया क्रुनः क्रुॅं रः वेदः ग्रे॰ पेंद्रः रुदः। तुः वें क्रें॰ देदः में विश्वास्त्रः विश्वास्त्रः। **ॻॖॱॸॱॻऻॸॱॴॸॱऄॸॱॸॱढ़ॏॻॱॸॖॱढ़ॹॗॸॱऄॕॸॱॸ॓ॸऻ**





Tsering And Her Yak Go To The Moon

By Kalsang Yangzom Illustrated by Tenzin Tendhar



Spring was Tsering's favorite time of the year because it was also the time for her school to reopen after the cold winter. She was starting Grade II this spring and tomorrow was the first day of class. She was excited to see her all her new books, especially the ones on science. Her Ayi often told her stories about the Sun, the Moon, and the stars while making her braids. Tsering especially loved the Moon stories because she was born on a full moon night. Her Ayi told Tsering about Mr. Rabbit, who sacrificed itself to feed an old man that was begging for food. As Mr. Rabbit could not hunt or provide fruits to the old man, it reasoned that its body was a suitable sacrifice to feed him. The old man was Indra/Sakra/Sangpo in disguise and he rewarded Mr. Rabbit for his selflessness by putting his image on the moon. Mr. Rabbit then became a Bodhisattva and a symbol of virtue.

25



The clear night sky of her mountain home helped Tsering to see Mr. Rabbit's bright image on the moon and she dreamed of going on adventures with Mr. Rabbit and her trusty yak Reva. Reva was Tsering's best friend, and had named her hope because as a calf, Reva was very sick and Tsering along with her parents, had nursed it back to health and now they were inseparable. Reva even went with her to school sometimes and stood guard in the fields outside while Tsering made plans about her adventures on the moon. Now that school was starting, she could also ask Miss Tsomo, her class teacher, more about the moon and Mr. Rabbit. She never forgot to say 'goodnight' to the moon, to Mr. Rabbit, and her yak Reva before going to bed.



Miss Tsomo was Tsering's favourite teacher at school. She was kind and patient and was always there to listen to them. Once Tsering found a tiny worm on the school's playground and Ms Tsomo helped her to put it safely on the flowerbeds, where it would not be stepped on by anyone. "Every living being is precious," said Ms. Tsomo. So now whenever Tsering and Reva came across any insects on their way, they made sure it was put safely on the side of the path.



After a hearty meal of tsampa, chura and bhoja, Tsering and her father walked the short distance to the school where Ms Tsomo was waiting to welcome the students back to school. Ms Tsomo had decorated the classroom with Tibetan alphabets and with pictures of various animals and plants. There was a brand-new poster of the solar system as well and Tsering immediately went to it to look for the moon but saw that it was really small and she could not see Mr. Rabbit on it.



So with Ms Tsomo's help during the drawing class, Tsering drew a large moon with herself, Reva, and Mr. Rabbit on it. Tsering learned that the moon appeared white because of the combined effects of the Sun's reflection on the moon's surface and the earth's atmosphere. She also told Tsering about Neil Armstrong, the first person to walk on the moon, which happened on July 20, 1969. Since then, no one else had been there. Tsering was captivated by the idea of actually going to the moon and told Ms Tsomo that she wanted to be the next person on the moon and Reva would be the first yak on the moon. Ms Tsomo explained that to go to the moon, Tsering would have to study very hard, go to university, and become an astronaut. She also said that Tsering would be the first girl in the whole world to go to the moon. Those are just three things, Tsering thought to herself and went home that day with the dream and determination of becoming an astronaut, a moon traveller.

33



As Tsering got ready to go to bed that night, she looked intently at the chapter on the Solar System in her bed as she heard Reva grunting softly outside her window. She looked at the pictures of Niel Armstong and the first mission to the moon. She suddenly saw that it was her face in the astronaut's suit. She was wearing a gao that would provide protection on her journey and her Ayi was trying a khatak around her neck for good luck. She saw her parents, her classmates, and Ms. Tsomo all wishing her a successful mission to the moon. She stepped into the rocket and as it launched into the sky, Tsering felt her body tremble and realized that her mother was gently shaking her to wake her up for school. "Amay, ya lang," her mother said as her soft voice broke through the rumble of the rocket's engine.



Tsering excitedly told her mother about her dream, who told her it was a good omen for Tsering's bright future. Tsering was filled with determination to study hard and make her dream come true to explore the moon. With the support of her family, friends, and community, there was nothing that Tsering couldn't accomplish.



